Vol. 1, No. 1 (October 2012) P. 1-3 Sangeet Galaxy
ISSN: 2319-9695

भारतीय संगीत की विशेषताएं

–प्रो0 सुधीर कुमार वर्मा
पूर्व प्रधानाचार्य
भातखण्डे हिन्दुस्तानी संगीत महाविद्यालय
लखनऊ

संगीत आनन्द का अविर्भाव है। संगीत से अध्यात्म प्रकाशित होता है। संगीत ईश्वर का स्वरूप है। मानव ने संगीत प्रकृति से सीखा है। सृष्टि से कण–कण में अलौकिक संगीत व्याप्त है। हमारे शास्त्रों में कहा गया है कि सृष्टि का जन्म ही नाद के कारण हुआ। सृष्टि को नादेन जायते कहा गया है।

मानव मन में अनेक तरंगे उठती है, अनेक भाव उमड़ते है और उनकी अभिव्यक्ति करने के लिए वह अनेकों माध्यम ढूंढता है। तूलिका और रंगों का आधार लेकर जब किसी कागज पर अपने मनोभाव उतारता है तो उसे चित्रकला कहते है। मिट्टी, पत्थर या कोई अन्य धातु लेकर जब उसे वह एक कलाकृति का रूप प्रदान करता है, तो उसे मूर्तिकला कहते है। शब्दों को स्वर, लय, छन्द में जब बाधँता है तो उसे कविता कहते है। वेश–भूषा से बनाव श्रृंगार करके, शरीर के विभिन्न अंगों को एक गति में संचालित करके जब वह भावों की अभिव्यक्ति करता है तो उसे नाट्यकला कहते है। कहने का तात्पर्य यह है कि अभिव्यक्ति के जितने कलात्मक माध्यम है सब में स्थूल आधार है। किसी न किसी वस्तु का प्रयोग होता है, जबकि संगीत एक ऐसी कला है जिसका आधार ही सूक्ष्म है –स्वर और लय। संगीतोपयोगी नाद को स्वर कहते है और गति के प्रवाह को लय कहते है। स्वर और लय दो माध्यम है जिसका आधार लेकर संगीतज्ञ मनोभावों के सूक्ष्म प्रकारों को अभिव्यक्त कर पाता है। संगीत में अपरिमित शक्ति है। गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा है कि ''भाषा जहाँ अपना कार्य समाप्त करती है संगीत वहाँ से अपना कार्य आरम्भ करता है।'' कहने को तात्पर्य यह है कि जो शब्दों में अभिव्यक्त नही हो पाता वह स्वर से, लय से, छन्द से व्यक्त हो जाता है। संगीत चाहे किसी देश का हो, किसी जाति का हो, किसी भूखण्ड का हो, संगीत सभी के लिए आवश्यक है। संगीत से कोई अछूता नही रह सकता। मानव तो क्या सृष्टि के सभी जीव और प्रकृति के पेड़–पौधे संगीत के प्रभाव सीमा के अन्दर आते है। उत्कृष्ट संगीत सुव्यवस्थित समाज की स्थापना करता है। संगीत मानवतावाद का पोषक है।

संगीत में दो तत्त्व विद्यमान है–एक है लोकरंजन का तत्व और एक है अध्यात्म का तत्व। भारतीय संगीत की पृष्ठभूमि प्राचीनकाल से ही अध्यात्मिक रही है। भक्ति और उपासना के कोख से भारतीय संगीत का उद्भव हुआ है। वेदों में सामवेद संगीत का प्राचीनतम ग्रन्थ है। संगीत को मोक्ष प्राप्ति का साधन मानकर हमारे मनीषियों ने इसे ईश्वर का ही एक स्वरूप माना हैं। भारतीय संगीत क्षणिक आमोद–प्रमोद या अतृप्त तृष्णा की वस्तु न होकर ब्रह्मानन्द को प्राप्त कराता है। यही कारण है कि प्राचीनकाल में मन्दिर देवालयों और धर्म स्थलों पर

संगीत पुष्पित और पल्लवित होता रहा। हमारे प्राचीन मनीषियों ने संगीत के दो स्वरूप–मार्गी और देशी बताए है। **मार्गी संगीत वह है जो शास्त्रीय नियमों से बंधा हो और अध्यात्म का मार्ग हो जबकि देशी संगीत का अभिप्राय लोक संगीत से है**। लोकसंगीत जीवन के सहज रंगों का प्रकाशन करता है। भावों के अतिरेक में किसी अंचल विषेश के लोग अपना लोक संगीत रच लेते है। अभिव्यक्ति की पूरी स्वतंत्रता लोकसंगीत में रहती है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जबकि विश्व एक छोटे इकाई के रूप में परिवर्तित हो गया है, विज्ञान के विभिन्न उपकरणों ने भौगोलिक अन्तर को, दूरियों को और समय को छोटा करके बहुत नज़दीक ला दिया है, ऐसे समय में भारतीय संगीत की श्रेष्ठता और महत्ता बहुत बढ़ गयी है। रेडियो, टेप, दूरदर्शन, सी0डी. आदि ऐसे अनेक उपकरण है जो क्षण मात्र में पृथ्वी के एक कोने से दूसरे कोने तक किसी भी कला प्रदर्शन को पहुँचा देते है। भारतीय संगीत आज विश्व के सभी देशों में लोगों को आकर्षित कर रहा है और बड़ी संख्या में लोग भारतीय संगीत को अपना रहे है। पिछले पाँच दशकों में भारतीय संगीतज्ञों को विश्व मंच पर अपार प्रतिष्ठा, यश और कीर्ति मिली है। हमारे संगीत का गम्भीरता से अध्ययन भी इन देशों में किया जा रहा है। सारा विश्व चकित है कि भारतीय संगीत प्राचीनकाल से ही कितना वैज्ञानिक और प्रकृति के शास्वत नियमों से बंधा हुआ रहा है। हमारे यहाँ रागों की कल्पना ऋतुओं के अनुसार की गयी है। प्रकृति में होने वाले परिवर्तनों के साथ जो वातावरण सृजित होता है, उसके अनुरूप रागों की कल्पना की गई है। बसंत ऋतु के राग अलग है, वर्षा त्रतु के राग अलग है। शिशिर और हेमन्त ऋतु के राग अलग है। यहाँ तक कि हमारे संगीत मनीषियों ने स्वर और उनके प्रभाव का अपनी दिव्य दृष्टि से इतनी गहराई से अध्ययन किया हैं कि उन्होनें भोर के लिए अलग राग बनाये, सूर्योदय के पश्चात् गाने के लिए अलग राग बनाये, साँझ में संधि प्रकाश रागों की कल्पना की और मध्य रात्रि के लिए पृथक रागों की। आप सभी जानते है कि दरबारी और मालकोंस जैसे राग मध्य रात्रि के है। जोगिया, भैरवी प्रातःकालीन है तथा कल्याण रात्रि के प्रथम प्रहर के लिए। स्पष्ट है कि भारतीय संगीत ऋतु व समय के साथ विश्व में अनूठा है। भारतीय मनीषियों ने स्वर, लय, छन्द ताल का गहन, विशद और सूक्ष्म अध्ययन किया तथा उसके प्रयोग व उसके प्रभाव को समझा है। इसीलिए भारतीय संगीत की श्रेष्ठता निर्विवाद रूप से विश्व में स्वीकार की गयी है।

किसी भी देश का संगीत हो सात स्वर सभी के यहाँ है, परन्तु हमारे संगीत में कलाकार को बड़ी स्वतंत्रता है वह किसी भी फ्रीक्यूएन्सी पर अपना ''सा'' कायम कर सकता है और वही से अन्य छः स्वरों की स्थापना स्वयं हो जाती है। इसीलिए हमारे यहाँ 'सा' को षहज कहा गया है, अर्थात् वह स्वर जिससे छः स्वरों का जन्म हो। जब हम पाश्चात्य और भारतीय संगीत का तुलनात्मक अध्ययन करते है, तो जो बात विशेष रूप से

सामने आती है वह है अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता। पाश्चात्य संगीत में रचनाकार सर्वोपरि है और प्रदर्शन करने वाला रचनाकार के नियम प्रतिबन्धों के अधीन है जबकि भारतीय संगीत में कलाकार नियम से थोड़ा सा बँधा होकर भी अपनी कल्पना और अपनी अभिव्यक्ति के लिये पूर्णतया स्वतंत्र रहता है। वह अपनी स्वभाव, रूचि और अनुभव के आधार पर अभिव्यक्ति करता है। इस बात को यूँ समझ लिया जाए कि राग मालकोंस यदि पं0 भीमसेन जोशी गाये या फिल्म का गायक गाये या फिर महाविद्यालय में सीख रहा कोई विद्यार्थी गाये, राग का रूप वही रहेगा परन्तु अभिव्यक्ति से स्तरों में जमीन–आसमान का अन्तर आ जायेगा। कहने का तात्पर्य यह है कि हमारे यहाँ बन्धनों के होते हुए भी अपरिमित स्वतंत्रता है। कल्पनाओं के लिए नये–नये आकाश खोजने की स्वतंत्रता है। भारतीय संगीतकार शून्य में सृष्टि रचता है। एक भाव को सौ तरीके से व्यक्त करने की स्वतंत्रता है। एक शब्द में सौ–सौ रंग भरने की स्वतंत्रता है। हम प्रकृति के साथ लय और छन्द का सामंजस्य रखते है जैसे झरने को स्वतंत्र बहने देते है। वैसे ही कलाकार को अभिव्यंजना के लिए पूरी स्वतंत्रता प्रदान करते है। पानी को प्रतिबन्धित करके फव्वारे के रूप में बहाना यह पाश्चात्य संस्कृति की देन है। एक सोच है जो भारत को पूरे विश्व से अलग कर देती है –वह है कण–कण में ''सत्यम् शिवम् सुन्दरम्'' को देखना। भारतीय संस्कृति में कोई भी वस्तु मात्र सत्य है, हमें स्वीकार नही। उसमें शिवम् तत्व अर्थात कल्याण करने का तत्व और सौन्दर्य तत्व अर्थात् मनोहारी होना आवश्यक है।

भारतीय संगीत मनीषियों ने संगीत को योग कहा। योग की भाषा जो जानते है, तो वे मानव के सप्त च्रकों का अर्थ भी समझते होगें। ये सप्त चक्र है– मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अहत, अनहत, आज्ञा, सहस्त्रार। इन सात स्वरों का सात चक्रों से सीधा सम्बन्ध है। यह संयोग नही है कि सात दिन होते है, सात चक्र होते है, और सात सुर भी होते है। यह भी एक संयोग नही है कि सप्त ऋषि होते है और भारतीय विवाह पद्धति में सप्तपदी होती है। ये सारी बातें एक दार्शनिक सूत्र से बंधी है। यह सब अन्योन्याश्रित है। स्वर के रंग होते है। तो दिन के भी रंग होते है और यह सब हमारे सप्तचक्रों पर प्रभाव डालते है और उनको क्रियाशील बनाते है। इसीलिए भारतीय संगीत मनीषियों ने राग को, लय को, छन्द को दिन और रात के समय चक्र के अनुरूप बाँधा है। सूक्ष्म से सूक्ष्म प्रभावों का अध्ययन किया है और संगीत के उस स्वरूप को स्थापित किया है जिससे मानव मात्र का कल्याण हो सके, विश्व बन्धुत्व हो सके, विश्व शान्ति स्थापित हो सके और वसुधैव कुटुम्बकम की भावना अपने पूरे अर्थ के साथ इस धरती पर चरितार्थ हो सके।